

ॐ जय जगदीश हरे ,  
स्वामी जय जगदीश हरे ।  
भक्त जनों के संकट ,  
दास जनों के संकट ,  
क्षण में दूर करे ।  
ॐ जय जगदीश हरे ॥  
जो ध्यावे फल पावे ,  
दुःखबिन से मन का ,  
स्वामी दुःखबिन से मन का ।  
सुख सम्पति घर आवे ,  
सुख सम्पति घर आवे ,  
कष्ट मिटे तन का ।  
ॐ जय जगदीश हरे ॥  
मात पिता तुम मेरे ,  
शरण गहूं किसकी ,  
स्वामी शरण गहूं मैं किसकी ।  
तुम बिन और न दूजा ,  
तुम बिन और न दूजा ,  
आस करूं मैं जिसकी ।  
ॐ जय जगदीश हरे ॥  
तुम पूरण परमात्मा ,

तुम अन्तर्यामी ,  
स्वामी तुम अन्तर्यामी ।  
पारब्रह्म परमेश्वर ,  
पारब्रह्म परमेश्वर ,  
तुम सब के स्वामी ।  
ॐ जय जगदीश हरे ॥  
तुम करुणा के सागर ,  
तुम पालनकर्ता ,  
स्वामी तुम पालनकर्ता ।  
मैं मूर्ख फलकामी  
मैं सेवक तुम स्वामी ,  
कृपा करो भर्ता ।  
ॐ जय जगदीश हरे ॥  
तुम हो एक अगोचर ,  
सबके प्राणपति ,  
स्वामी सबके प्राणपति ।  
किस विधि मिलूं दयामय ,  
किस विधि मिलूं दयामय ,  
तुमको मैं कुमति ।  
ॐ जय जगदीश हरे ॥  
दीन -बन्धु दुःख -हर्ता ,

ठाकुर तुम मेरे ,  
स्वामी रक्षक तुम मेरे ।  
अपने हाथ उठाओ ,  
अपने शरण लगाओ  
द्वार पड़ा तेरे ।  
ॐ जय जगदीश हरे ॥  
विषय -विकार मिटाओ ,  
पाप हरो देवा ,  
स्वामी पाप हरो देवा ।  
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ ,  
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ ,  
सन्तन की सेवा ।  
ॐ जय जगदीश हरे ॥

www.yousigma.com